Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12** ] [ Total No. of Printed Pages : **4**

# SLA–326

## B.A. Part–III (Supplementary) Examination, 2022

## HINDI LITERATURE

Paper - II

## (निबंध एवं भाषा)

*Time : 1½ Hours* ] [ *Maximum Marks : **100***

**खण्ड–अ** **(अंक : 2 × 10 = 20)**

**नोट** :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

**खण्ड–ब** **(अंक : 8 × 5 = 40)**

**नोट** :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

**खण्ड–स** **(अंक : 20 × 2 = 40)**

**नोट** :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

**खण्ड–अ**

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द) :

   (i) दर्द करने वाली दाढ़ की तुलना लेखक ने किन लोगों से की है ? 'दाँत' निबंध के आधार पर बताइए।

   (ii) बैर और क्रोध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने क्या अंतर बताया है ?

(iii) भारत भूमि के प्रति हमारे कौन-कौनसे कर्तव्य हैं ? 'भूमि को देवत्व प्रदान' शीर्षक निबंध के आधार पर बताइए।

(iv) महादेवी वर्मा के अनुसार भारतीय समाज में नारी की दयनीय दशा के क्या कारण हैं ?

(v) राष्ट्र भाषा के संबंध में प्रेमचंद के क्या विचार थे ? 'प्रेमचंद और भाषा समस्या' निबंध के आधार पर बताइए।

(vi) नयी और पुरानी आधुनिकता में कुबेरनाथ राय ने मूल रूप से क्या अंतर बताया है ?

(vii) देवनागरी लिपि के नामकरण के संदर्भ में प्रचलित **दो** मतों का उल्लेख कीजिए।

(viii) भारतेंदु युग के किन्हीं **चार** निबंधकारों के नाम बताइए।

(ix) विचारात्मक निबंध व भावात्मक निबंध में अंतर स्पष्ट कीजिए।

(x) विषय तथा शैली के आधार पर निबंधों का वर्गीकरण कीजिए।

## खण्ड–ब

**नोट** :– निम्नलिखित सात गद्यावतरणों में से किन्हीं **पाँच** गद्यावतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द) :

2. इस दृढ़ता को हम हठ न कहेंगे। निस्संदेह हठ की मज़बूती इसमें है, पर एक तरह का अनोखापन जो इस दृढ़ता में पाया जाता है, इससे हठ या दुराग्रह के दोष का सम्पर्क भी इससे दूर हटा हुआ है। क्योंकि, हठ का शब्द, सुनने वाला किसी के बारे में तभी प्रयोग करता है, जब उसकी मज़बूती का तो वह कायल है पर बात उसकी अप्रिय और अग्राह्य है जिसको आप मानसिक दृढ़ता के साथ लगा ही नहीं सकते, क्योंकि यदि सुनने वालों को ग्राह्य-अग्राह्य, प्रिय-अप्रिय तय करने की फुरसत मिली तो बोलने वाले की मानसिक क्षति की प्रशंसा में हम 'दृढ़' का प्रयोग करेंगे ही नहीं। मानसिक दृढ़ता का मुख्य लक्षण या गुण यह है कि वक्ता सुनने वाले का मन अपनी मुट्ठी में कर ले।

3. क्रोध शान्ति-भंग करने वाला मनोविकार है। एक का क्रोध दूसरे में भी क्रोध का संचार करता है। जिसके प्रति क्रोध-प्रदर्शन होता है वह तत्काल अपमान का अनुभव करता है और इस दु:ख पर उसकी भी त्यौरी चढ़ जाती है। यह विचार करने वाले बहुत थोड़े निकलते हैं कि हम पर जो क्रोध प्रकट किया जा रहा

है, वह उचित है या अनुचित। इसी से धर्म, नीति और शिष्टाचार तीनों में क्रोध से निरोध का उपदेश पाया जाता है। सन्त लोग तो खलों के वचन सहते ही हैं, दुनियादार लोग भी न जाने कितनी ऊँची-नीची पचाते रहते हैं, सभ्यता के व्यवहार में भी क्रोध नहीं तो क्रोध के चिह्न दबाये जाते हैं।

4. सुमन के दिव्य-सौन्दर्य के लिए उसका परागमय स्थूल शरीर ही नहीं, वरन् कँटीली डालें और मिट्टी के ढेले भी आवश्यक हैं। किन्तु हम मिट्टी के ढेले पर ही सन्तोष नहीं कर सकते। सुमन का सौरभ मिट्टी के ढेले की पूर्णता है। वही पृथ्वी का गन्धवती होना प्रमाणित करता है। किन्तु हमको यह भी मानना होगा कि फूल के साथ हाँडी जिसमें दाल पकती है और घड़ा जिसमें पानी ठण्डा होता है, मिट्टी की पूर्णताओं में से हैं। इसके साथ हम यह भी नहीं भूल सकते कि सारी मिट्टी घड़े और कुल्हड़ बनाने में ही खर्च नहीं हो जाती, उसके खिलौने भी बनते हैं और उससे सुमन-सौरभ भी उत्पन्न होता है।

5. ''ये दोनों कवि न तो कोरे भावनावादी हैं न कल्पनावादी; इनके काव्य में मानव-अनुभूतियों की यथार्थता सन्निविष्ट हुई है। दूसरे शब्दों में, ये दोनों कवि सच्चे अर्थों में मानव-जगत् की स्थितियों और सहानुभूतियों के कवि हैं। इनके काव्य का केन्द्रीय तत्त्व जीवन को ऊपर से न देखकर उसके अन्तरंग में जाकर देखने का है। यही कारण है कि जब अन्य अनेक कवि जीवन-स्थितियों को छोड़कर केवल उसके आदर्श या अभिलषित रूप का निरूपण करने लगे हैं, तब इन दो कवियों ने मानव-अनुभवों का यथार्थ संस्पर्श कभी नहीं छोड़ा।''

6. ''हमारे विशाल देश में हिमालय की अनन्त हिमराशि ने जिन वारि-धाराओं को जन्म दिया है, उनमें उत्तरापथ को सींचने वाली गंगा और यमुना नाम की नदियाँ जीवन की धमनियों की तरह हमारे ऐतिहासिक चैतन्य की साक्षी रही हैं। उनकी गोद में हमारे पूर्व पुरुषों ने सभ्यता के प्रांगण में अनेक नए खेल खेले। उनके तटों पर जीवन का जो प्रवाह प्रचलित हुआ, वह आज तक हमारे भूत और भावी जीवन को सींच रहा है। भारत माता है और हम उसके पुत्र हैं, यह एक सच्चाई हमारे रोम-रोम में बिंधी हुई है। नदियों की अन्तर्वेदि में पनपने वाले आदि युग के जीवन पर अब हम जितना अधिक विचार करते हैं, हमको अपने विकास और वृद्धि की सनातन जड़ों का पृथ्वी के साथ सम्बन्ध उतना ही अधिक घनिष्ठ जान पड़ता है।''

7. आदमी और पेड़ में यही तो अन्तर है कि पेड़ स्वभाव से परार्थी है, आदमी स्वभाव से स्वार्थी है। तमाल एक काला काठ है उकठा हुआ, उसकी झुर्रियाँ गाँठ बन चुकी हैं। वृन्दावन के निधुवन में एक तमाल का पेड़ है, उसे शायद बिजली चीर गयी है, आधा पेड़ एकदम सूख गया है पर अभी भी एक डाल है जिसमें पत्ते हरे हैं। जाने कौन जीवन की दुर्दम्य आकांक्षा उसे हरा रखे हुए है। मृत्यु की यंत्रणा को कैसे झेला जाता है, यह बस तमाल से कोई सीखे। आजकल जब इसकी पोर-पोर का दर्द उभर रहा है, पोर-पोर की नसें टूट रही हैं, मृत्यु इसके समूचेपन को मथ रही है, तब यह कल्पना भी नहीं होती कि इस पेड़ में कभी जीवन आयेगा, लगता यही है, वह पेड़ अब मरा, कि तब मरा।

8. साहित्य लौकिक-व्यावहारिक जीवन के अनुभवों से गुजरते हुए ही परमार्थ की सिद्धि करता है। पारमार्थिक स्तर पर अभिन्न आत्म-व्यावहारिक स्तर पर मन और ममेतर अर्थात् शेष सृष्टि के बीच संलग्नता और ममेतर के प्रति अपने कर्तव्य बोध में व्यंजित होती है। इस दृष्टि से जो व्यावहारिक स्तर पर नैतिक है, वही पारमार्थिक स्तर पर आध्यात्मिक है। महात्मा गाँधी जब नैतिक को ही आध्यात्मिक मानने का आग्रह करते हैं तो उसे इसी दृष्टि से समझना चाहिए।

## खण्ड–स

**नोट** :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द) :

9. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं ?' शीर्षक निबंध के आधार पर हजारीप्रसाद द्विवेदी की निबंध कला की विशेषताएँ बताइए।

10. 'प्रेमचंद और भाषा समस्या' शीर्षक निबंध में विवेचित डॉ. रामविलास शर्मा के विचारों को स्पष्ट कीजिए।

11. देवनागरी लिपि के गुण-दोषों पर प्रकाश डालते हुए देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता को स्पष्ट कीजिए।

12. ''तुलसी का काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।'' कथन के संदर्भ में 'तुलसी के समन्वयवाद' पर एक आलोचनात्मक निबंध लिखिए।